महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वड़ोदरा की पीएच•डी• [हिन्दी] उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-सार

“अमरकांत के कथा साहित्य में सामाजिक वर्गीय विषमताओं का अध्ययन”

शोध-छात्र

ओम प्रकाश

नामांकन संख्या-FOA/1453 (27-09-2017)

शोध-निर्देशक

प्रो.कनुभाई विछियाभाई निनामा

प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

2025

हिन्दी विभाग (कला संकाय)

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा गुजरात

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक

प्रथम अध्याय	अमरकांत का व्यक्तित्व और कृतित्व	1-31
	(क) अमरकांत का व्यक्तित्व	
	(ख) अमरकांत का कृतित्व	
	1. कहानी संग्रह	
	2. उपन्यास साहित्य	
	3. बाल साहित्य	
द्वितीय अध्याय	हिंदी कथा साहित्य में अमरकांत का स्थान	32-87
	(क) हिन्दी कहानी साहित्य में अमरकांत का स्थान	
	1. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी	
	2. प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी	
	3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी	
	(ख) अमरकांत का उपन्यास विधा में स्थान	
	1. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास	
	2. प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास	
	3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास	
तृतीय अध्याय	अमरकांत के उपन्यसों में सामाजिक वर्गीय जीवन: प्रमुख समस्यायें	88-111
	(क) अमरकांत के उपन्यासों में कस्बाई जीवन का यथार्थ चित्रण	
	(ख) अमरकांत के उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का स्वरूप और उनके वैकल्पिक समाधान के सूत्र।	

चतुर्थ अध्याय	अमरकांत की कहानियों में सामाजिक वर्गीय जीवन	112-156
	(क) दलित और शोषित वर्ग के चित्रण की विचार दृष्टि	
	(ख) समाज के विभिन्न सम्बंधो में प्रस्तुत दृष्टिकोण	
पंचम अध्याय	कथाशिल्प	157-216
	(क) सामाजिक जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने में कथा भाषा की जीवंतता	
	(ख) पूर्व के कथा साहित्य से अमरकांत के कथा साहित्य में शिल्पगत भिन्नता	
षष्ठ अध्याय	उपसंहार	217-231
	संदर्भ ग्रंथ सूची	232-240

शोध - सार

" अमरकांत के कथा साहित्य में सामाजिक वर्गीय विषमताओं का अध्ययन "

शोध-प्रबन्ध का संक्षिप्त विवरण(EXECUTIVE SUMMARY)

प्रारंभ से ही मेरी रुचि हिन्दी भाषा, साहित्य एवं उपन्यास और कहानी के प्रति रही है। मैंने अपनी मातृभाषा हिंदी का सम्मान सहृदय पूर्वक किया है और करता रहूंगा। इतना ही नहीं मैंने अपने मेहनत से आज तक हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति अपने रुचि या मूल्यों को बरकरार रखा हूँ। जिस प्रकार साहित्य से मानव संस्कारों का विकास होता है, उसी प्रकार साहित्य की विधाओं में बच्चों से लेकर बुजुर्गों के मन को मोहित करके अपने गुणों से बांध रखने की शक्ति है। मैं भी साहित्य के इस शक्ति से अछूता नहीं रहा।

सम्प्रति जीवन की अवशयकताओं, अनिवार्यताओं, उपलब्धियों, परीघटनाओं एवं संगतियों-विसंगतियों को सही ढंग से परखने का कार्य आज जिस मध्यम के द्वारा अधिकार पूर्वक संपन्न हो रहा है वाह माध्यम है साहित्य की अनेक विधाएं विशेष कर उपन्यास। वर्तमान समय में लेखक अपने उपन्यासों और कहानियों के मध्यम से समाज की विसंगतियों को उजागर करने का कार्य कर रहे हैं । यादि हम ऐसा कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।वास्तव में यह ऐसा सूत्र है जो मानव और समाज को विश्व से जोड़ता है।

अनुसंधान पद्धति-

अनुसंधान पद्धति केवल एक शोध अध्ययन की व्यावहारिक पक्ष को संदर्भित करती है। या शोध कार्य करने के विशेष नियम या विधि जो व्यावहारिक युक्तियुक्तता तथा तर्कसंगति पर आधारित हो। एक शोधकर्ता वैध और विश्वसनीय परिणाम सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्थित रूप से एक अध्ययन डिजाइन करता है, जो अनुसंधान के लक्ष्यों, उद्देश्यों और अनुसंधान के प्रश्नों को उद्घाटित करता है। अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियां हैं जिनमें साहित्यिक अनुसंधान, वर्णनात्मक अनुसंधान, विवरणात्मक अनुसंधान, विश्लेषणात्मक अनुसंधान तथा तुलनात्मक अनुसंधान आदि का प्रयोग मैंने इस शोध-प्रबंध में किया है।

साहित्यिक अनुसंधान पद्धति-

साहित्यिक अनुसंधान के विभिन्न पक्ष हो सकते हैं जैसे भाव संबंधित साहित्यिक शोध कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा सहित, निबंध, महाकाव्य आदि भाव जगत की विशिष्ट अवस्था से जन्म लेते हैं। इनमें लेखक के भावों, चिंतन, रसात्मक अभिव्यक्ति और अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। वैयक्तिक-निर्वैयक्तिक

भावनाओं की अनुभूत, जन्म, अभिव्यक्ति भी साहित्यिक शोध का विषय है। राष्ट्रीय भावना एवं समाज से संबंधित विषय पर भी अच्छे शोध के आधार हो सकते हैं । कल्पना एवं भावनात्मक तत्वों को आधार में ग्रहण कर भी शोध की विषय वस्तु बना सकते हैं। इन परिस्थितियों में शोधार्थी समाज, विज्ञान, नीति विज्ञान, मनोविज्ञान आदि विषयों पर शोध कर सकता है। विचारात्मक, वर्णनात्मक, भावनात्मक अनुसंधान किसी भी साहित्य की पृष्ठभूमि में सामान्यतः कोई विचारधारा अवश्य विद्यमान होती है । अभिव्यक्ति परक शोध साहित्य का अनिवार्य उपकरण अभिव्यक्ति पक्ष है। इसे कलानुसंधान, भाषा अनुसंधान आदि में परिगणित किया जा सकता है।

हिंदी साहित्य में किसी भी कालखंड को लेकर अनेक अनुसंधान किए गए हैं । यह दो प्रकार के हो सकते हैं । जैसे किसी रचनाकार की रचना प्रवृत्तियों को लेकर अनुसंधान या फिर किसी कालखंड की विशेषता को आधार रूप में ग्रहण कर शोध अध्ययन रचनाकार की काव्य प्रवृत्तियों का उदाहरण दिया जा सकता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति-

वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति का सम्बंध प्राचीन से न होकर वर्तमान काल से होता है ।इस पद्धति का प्रयोग सम्प्रति में शिक्षा, शिक्षालय तथा शिक्षण आधारित तत्वों का अध्ययन एवं व्याख्या अन्य विशिष्ट प्रकार के अनुसंधान पद्धति में की जाती है जिसे वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति कहा जाता है। शोध विशेषज्ञों के अनुसार शिक्षा संबंधित स्थितियां, प्रचलित व्यवहार विश्वास दृष्टिकोण जो स्थापित हो चुके हैं, प्रक्रियाएं जो गतिशील हैं, सम्प्रति नई दिशाएं एवं प्रवृत्तियाँ निरंतर विकसित हो रही है का अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति में किया जाता है। संक्षेप में कहां जा सकता है कि वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति से तात्पर्य एक ऐसे अनुसंधान पद्धति से है जिसके आधार पर हम किसी शैक्षणिक संस्था, परिस्थिति, व्यवस्था, प्रविधि, स्थिति, जन समुदाय आदि के वर्तमान स्वरूप का व्यवस्थित अध्ययन करते हैं, वर्तमान स्तर की वैध जानकारी प्राप्त करते हैं।

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति-

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग रचना में किसी दी गई परिघटना से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए की जाती है। इनका सम्बंध सम्प्रति में विद्यमान स्थितियों अथवा सम्बंधों, मौजूदा चलनों,वर्तमान मान्यताओं, दृष्टिकोणों अथवा रुखों अथवा जारी प्रक्रियाओं से और उनके प्रभाव विकासशील चलनों से होता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि ये अध्ययन के समय पाई जाने वाली स्थिति की प्रकृति का निर्धारण करती है। विवरणात्मक अनुसंधान का उद्देश्य किसी परिस्थिति में परिवर्तियों अथवा स्थितियों के संदर्भ में क्या पाया जाता है, इसका वर्णन करता है ।

विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति-

इस पद्धति का प्रयोग निष्कर्ष निकालने और निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए जानकारी एकत्र करने, विश्लेषण करने और व्याख्या करने की प्रक्रिया है । शोध के उद्देश्य और आपके पास मौजूद तथ्यों के आधार पर हम विभिन्न तरीकों का उपयोग करके विश्लेषणात्मक शोध कर सकते हैं।

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति-

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग हमेशा से विश्व के सम्पूर्ण साहित्य में अभिव्यक्तपरख मानवीय चेतना के अध्ययन से होता आया है। ज्ञान एवं अनुभूति के क्षेत्र में सर्वमान्य मान्यताओं को उद्घाटित कर एकता का सामंजस्य पूर्ण उदाहरण तुलनात्मक शोध द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। तुलनात्मक शोध अनेक विधियों द्वारा किया जा सकता है, जैसे काव्य कृतियों की भाषा का तुलनात्मक शोध, भाषानुसंधान सम्बंधी तुलनात्मक शोध, एक समयावधि की रचनाओं में तुलनात्मक अध्ययन का फिर समान विषय वस्तु संबंधित रचनाओं में तुलनात्मक अनुसंधान।

हिंदी भाषा भारत की संपर्क भाषा है अतः इसमें तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा विकास और समृद्धि के अवसर और भी प्राप्त हो सकते हैं। वर्तमान समय में एक से अधिक भाषाओं और लिपियों की जानकारी साहित्यिक उपलब्धि की दिशा में जितनी कारगर है उतनी ही राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में भी। अतः तुलनात्मक अनुसंधान इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध - प्रबंध को निम्नलिखित विवरण के अनुसार वर्गीकृत करके कार्य पूरा किया है। जिससे विषय का प्रतिपादन भली प्रकाश सम्भव और सम्यक रूपेण हो सके।

भूमिका-

साहित्य समाज का अंकन है, समाज व्यक्तियों का समूह है, समाज में व्यक्ति का मूल्य, उसकी महत्ता, उसकी सामाजिक स्थिति (सोशल स्टेटस) से निर्धारित होती है। समाज में जिस व्यक्ति का सामाजिक स्टेटस ऊपर है, वह अधिक महत्वपूर्ण है। किसी व्यक्ति का रूतबा या उसकी विशेष सामाजिक आर्थिक स्थिति इसके कारण है और इन कारणों का निर्धारक तत्व है-आय, व्यवसाय,शिक्षा और वंश परम्परा आदि। बहुधा इन्हीं के कारण व्यक्ति की विशेष सामाजिक और आर्थिक स्थिति बनती है और समाज में उसका कद निर्धारित होता है। इन्हीं सभी के कारण समाज में व्यक्ति या व्यक्ति समूह की विशिष्ट सामाजिक प्रवृत्तियों का निर्माण होता है। इसी सामाजिक और आर्थिक दावेदारी ने समाज का स्तरीकरण किया। इस स्तरीकरण का प्रतिफल वर्तमान का मध्यवर्ग है। यद्यपि ऐतिहासिक काल के प्रारंभ में हम समाज के क्रम को देखते हैं और उसमें तथा तथाकथित मध्यवर्ग की स्थिति को भी देखते हैं। लेकिन वर्तमान मध्यवर्ग की संकल्पना आधुनिक विश्व की देन है और भारतवर्ष में इसका उदय औपनिवेशिक भारत में अंग्रेजी शिक्षा की प्रभाव से हुआ है ।

समय की गति प्रवाहमान होती है। समय की धारा का आवागमन निरंतर चलता रहता है। जिससे कई महान आत्माएं पैदा होती हैं, कई समय रूपी काल के प्रभाव में लुप्त हो जाती हैं। इसी गतिशील समय की धारा में अपने जीवन व कार्य से अपनी अमिट छाप अंकित करने वालों में वरिष्ठतम नाम आता है अमरकांत का। जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से हिंदी साहित्य लेखन परंपरा में भी श्री वृद्धि करके हिंदी साहित्य विशेषतः गद्य साहित्य को एक नई दिशा दशा प्रदान की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी साहित्यकारों में प्रेमचंद के यथार्थवादी दृष्टिकोण को जीवित रखने का श्रेय अमरकांत को जाता है। साहित्य के क्षेत्र में अमरकांत के अतुलनीय योगदान के लिए हिंदी साहित्य हमेशा - हमेशा के लिए उनका ऋणी रहेगा। अमरकांत प्रेमचंद की परंपरा की कथाकार हैं। परम्परा का विकास करने वाला ही परम्परा का कथाकार कहा जाता है।

पूर्व में किए गए शोध का संक्षिप्त वर्णन-

प्रस्तुत शोध प्रबंध को लेखबद्ध करने से पूर्व मुझे उपलब्ध अनेक शोध कार्यों का अवलोकन करने का अवसर मिला। उन्हीं शोध ग्रथों के अवलोकन से प्रबंध को लिपिबद्ध करने की दृष्टि मिली। यह सत्य है कि हिन्दी साहित्य में अमरकांत कोई अनजाना नाम नहीं है और सम्भव हो इनसे सम्बंधित साहित्य पर अनेक शोध कार्य हुए हों। अमरकांत की साहित्य से संबंधित जिन शोध कार्यों का मैं अवलोकन किया, उनमें सिंहल की शोध कृति 'नई कहानी और अमरकांत' (पुस्तक रूप) , डॉक्टर योगेश गोकुल पाटिल का अमरकांत का कथा साहित्य : कथ्य एवं शिल्प, बहादुर सिंह परमार का 'अमरकांत का कथा साहित्य', सुभाष जाधव का 'कहानीकार अमरकांत' तथा अमरकांत द्वारा लिखित विभिन्न उपन्यासों एवं उनकी कहानियों, कहानी संग्रहों आदि सभी शोध ग्रंथ पुस्तक के रूप में उपलब्ध है। इन सभी ग्रन्थों में लगभग- लगभग अमरकांत के साहित्य का विभिन्न पहलुओं के आधार पर मूल्यांकन किया गया है। नई कहानी और अमरकांत में नई कहानी की प्रमुख विशेषताओं के परिपेक्ष में अमरकांत के साहित्य का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

इन सभी शोध कार्यों से हटकर मैंने "अमरकांत के कथा साहित्य में सामाजिक वर्गीय विषमताओं का अध्ययन" शीर्षक नाम से अपना विषय चुना। सम्भव है कि और भी शोधकार्य सामाजिक वर्गीय विषमताओं से सम्बंधित हो। मैंने प्रस्तुत शोध ग्रंथ में सामाजिक वर्गीय विषमताओं के उदय की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए अमरकांत के कथा साहित्य में वर्णित उच्चवर्गीय, निम्नवर्गीय एवं मध्यवर्गीय विषमताओं के अध्ययन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इसमें भी विशेषकर मध्यवर्ग पर विशेष प्रकाश डाला गया। भारतीय समाज में उच्चवर्गीय, निम्नवर्गीय, मध्यवर्गीय की पारिवारिकता, धार्मिकता, जातीयता , संकीर्णता,मानसिकता, आर्थिकता आदि पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन करने की कोशिश की है। उच्चवर्गीय, निम्नवर्गीय एवं मध्यवर्गीय परिवारों में महिलाओं की स्थिति उसकी सामाजिक हैसियत की पड़ताल करने की कोशिश की है। शोध अनुसंधान वैज्ञानिक ढंग से कुछ मौलिक और नए ज्ञान की खोज या किसी भी व्यवस्थित अध्ययन को कहते हैं। सामान्यतः अनुसंधान की बुनियादी शर्त नए तथ्यों की खोज माना जाता है, लेकिन कला और मानविकी के क्षेत्र

में यह आवश्यक नहीं की हर शोध में नए तथ्यों की खोज हो अपितु ज्ञात तथ्यों की नई पुनर्व्यवस्था अथवा पुनर्मूल्यांकन या नए संदर्भों में उनकी उपस्थिति भी शोध के दायरे में आते हैं या आसकते हैं।

प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य एवं महत्व-

यद्यपि शोधकर्ता शुरुआत से ही हिंदी साहित्य का विद्यार्थी रहा, जहां अमरकांत या उनके साहित्य की बात है, इसका परिचय शोधकर्ता को काफी देर से हुआ। पहली बार परास्नातक स्तर पर शोधकर्ता 'दोपहर का भजन', पढ़ा । तब तक ये बड़े साहित्यकार हैं मुझे इसका पता नहीं था । जब मैंने डिप्टी कलेक्ट्री और 'जिंदगी और जोंक' पढ़ी और बाद में हत्यारे तो मुझको लगा कि उन्हें और पढ़ना चाहिए। जब मैं शोध के लिए पंजीकृत हुआ तो विषय चयन की बात आई, तो मन में आने वाले कई नामों में अमरकांत को चुना।

अमरकांत हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा के संवाहक साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् जिन हिंदी साहित्यकारों ने प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा को नये आयाम प्रदान किए, अमरकांत उनके सर्वप्रमुख हस्ताक्षर हैं।अमरकांत के पात्र समाज के सबसे निम्नतर एवं निकृष्टतम लोग भी हैं। वह दुष्ट और कमीने लोगों के मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझते थे । अमरकांत निम्न मध्यवर्गीय दयनीयता, असफलता, असहायता को उकेरने वाले कथाकार हैं। आर्थिक रूप से बेहाल, बेकार नवयुवकों की मानसिकता को दर्ज करना उनका ध्येय रहा । अमरकांत जिस मध्यवर्गीय दहलीज पर खड़े रहे उसी को उन्होंने अपने साहित्य का अनिवार्य अंग बनाया। वे समाज की वास्तविकता परिवारिकता को हिंदी के अधिकांश कहानीकारों की अपेक्षा अधिक गहराई और सच्चाई से देखते हैं । अमरकांत के साहित्य का महत्व इस दृष्टिकोण से है कि भारतवर्ष की अधिकांश जनता जिस निम्नवर्गीय एवं मध्यवर्गीय जीवन जीती है उसी जीवन को उन्होंने भोगा एवं रचा। इसलिए यह अधिक प्रामाणिक एवं सारभूत है।

शोध का उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध प्रबंध को लेखबद्ध करने से पूर्व मुझे उपलब्ध अनेक शोध कार्यों का अवलोकन करने का अवसर मिला। उन्हीं शोध ग्रन्थों के अवलोकन से प्रबंध को लिपिबद्ध करने की दृष्टि मिली। यह सत्य है कि हिंदी साहित्य में अमरकांत कोई अनजाना नाम नहीं है और सम्भव हो इनसे सम्बंधित साहित्य पर अनेक शोधकार्य हुए हों। अमरकांत के साहित्य से सम्बंधित जिन शोध कार्यों का मैंने अवलोकन किया, उनमें सिंहल की शोध कृति 'नई कहानी और अमरकांत'(पुस्तक रूप), डॉ० योगेश गोकुल पाटिल का 'अमरकांत का कथा सहित्य : कथ्य एवं शिल्प, बहादुर सिंह परमार का 'अमरकांत का कथा साहित्य, और सुभाष जाधव का 'कहानीकार अमरकांत' लगभग ये सभी शोध ग्रंथ पुस्तक रूप में उपलब्ध हैं। इन सभी शोध ग्रन्थों में लगभग - लगभग अमरकांत के साहित्य का विभिन्न पहलुओं के आधार पर मूल्यांकन किया गया है। नई कहानी और अमरकांत में नई कहानी की प्रमुख विशेषताओं की परिप्रेक्ष्य में अमरकांत के साहित्य का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

इन सभी शोध कार्य से हटकर मैं "अमरकांत के कथा साहित्य में सामाजिक वर्गीय विषमताओं का अध्ययन" शीर्षक नाम से अपना विषय चुना। संभव है कि और भी शोधकर उच्च वर्गीय, मध्यवर्गीय तथा निम्न वर्गीय से संबंधित हो। मैंने प्रस्तुत शोध ग्रंथ में उच्चवर्गीय, मध्यवर्गीय तथा निम्न वर्गीय समाज के उदय की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए अमरकांत की कथा साहित्य में वर्णित उच्च वर्गीय, मध्यवर्गीय तथा निम्न वर्गीय जीवन शैली का अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इसमें भी मैंने मुख्य रूप से मध्य वर्ग को ही आधार बनाया । भारतीय समाज में उच्चवर्गीय, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय की पारिवारिकता, धार्मिकता, जातीयता, संकीर्णता, मानसिकता, आर्थिकता आदि पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन करने की कोशिश की है। उच्चवर्गीय, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय परिवारों में नारी की अवस्थिति उसकी सामाजिक हैसियत की पड़ताल करने की कोशिश की है। शोध अनुसंधान वैज्ञानिक ढंग से कुछ मौलिक और नए ज्ञान की खोज या किसी भी व्यवस्थित अध्ययन को कहते हैं। सामान्यतः अनुसंधान की बुनियादी शर्त नए तथ्यों की खोज माना जाता है लेकिन कला और मानविकी के क्षेत्र में यह आवश्यक नहीं कि हर शोध में नए तथ्यों की खोज हो अपितु ज्ञात तथ्यों की नई पुनर्व्यवस्था अथवा पुनर्मूल्यांकन या नए संदर्भ में उनकी उपस्थिति भी शोध के दायरे में आते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का प्रति फलन (अध्याय विभाजन)

विषय विस्तार की दृष्टि से शोध प्रबंध को 6 अध्यायों में निबद्ध किया गया है। इन 6 अध्यायों को भी अध्ययन की सरलता एवं स्पष्ट के लिए कई उप बिंदुओं में विभक्त किया गया है। इस तरह विषय के समग्र पहलुओं के अध्ययन की हर संभव कोशिश की गई है।

शोध प्रबंध का प्रथम अध्याय 'अमरकांत का व्यक्तित्व और कृतित्व है' इस अध्याय में साहित्यकार के जन्म शिक्षा पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा उनके समग्र साहित्य का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत किया गया। साहित्यकार के द्वारा संपादित पत्र पत्रिकाओं की सूची तथा साहित्यकार द्वारा प्राप्त विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कारों का विवरण दिया गया है।

शोध प्रबंध का द्वितीय अध्याय 'हिंदी कथा साहित्य में अमरकांत का स्थान'-

इस अध्याय के को दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में हिंदी साहित्य के महान लेखक श्री प्रेमचंद की कहानियों के आधार पर अमरकांत जी की कहानी सहित्य के स्थान को वर्णित किया गया है । जिसमें प्रेमचंद के पूर्व हिंदी कहानी सहित्य, प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी सहित्य एवं प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी साहित्य को आधार बनाकर हिंदी कहानी साहित्य में अमरकांत के कहानी साहित्य का स्थान निर्धारित किया गया है।

इसी तरह भाग (ख) में प्रेमचंद के उपन्यासों के आधार पर अमरकांत के उपन्यास साहित्य के स्थान को वर्णित किया गया है । साथ ही साथ भारतीय समाज में इसके लिए उत्तरदाई परिस्थितियों एवं भारतीय मध्यवर्गीय समाज के स्तरीकरण पर प्रकाश डाला गया है। मध्यवर्ग के साथ ही साथ उच्च वर्ग एवं निम्नवर्ग

पर भी प्रकाश डाला गया है। इस भाग में भी प्रेमचंद को आधार मानकर प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास, प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास एवं प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास में अमरकांत के स्थान को वर्णित किया गया है।

शोध प्रबंध का तृतीय अध्याय है- 'अमरकांत के उपन्यासों में सामाजिक वर्गीय जीवन: प्रमुख समस्याएं'।

द्वितीय अध्याय की तरह इस अध्याय को दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में अमरकांत के उपन्यास साहित्य में वर्णित सामाजिक जीवन में जीवनयापन कर रहे कस्बाई जीवन के परिवारों की प्रमुख समस्याओं को वर्णित किया गया है। साथ ही निम्न एवं मध्यवर्ग के ग्रामीण एवं कस्बाई जीवन शैली ,जातीय परिदृश्य, धार्मिकता, मध्यवर्ग में व्याप्त सामाजिक शोषण एवं इस वर्ग की धार्मिक मोह ममता की गहन पड़ताल की गई है।

अध्याय के दूसरे भाग में अमरकांत के उपन्यासों में भारतीय समाज में फैल रही सामाजिक समस्याओं का स्वरूप और उनके वैकल्पिक समाधान के संदर्भ में वर्णित किया गया है। तथा सामाजिक संदर्भ की विवेचना एवं अमरकांत के साहित्य की विधिवत समीक्षा की गई है।

शोध प्रबंध का चतुर्थ अध्याय है- 'अमरकांत की कहानियों में सामाजिक वर्गीय जीवन'

प्रस्तुत अध्याय को भी दो भागों में विभाजित किया गया है प्रथम भाग में अमरकांत जी ने अपनी कहानी में दलित और शोषित वर्ग के चित्रण की विचार दृष्टि को विस्तार से प्रस्तुत किया है, साथ ही स्त्री पुरुष सम्बंध की मानवी आधार पर समीक्षा की गई है।

द्वितीय भाग में अमरकांत जी ने अपनी कहानियों के द्वारा समाज के विभिन्न सम्बंधों में प्रस्तुत दृष्टिकोण तथा जिजीविषा के साथ-साथ मध्यवर्गीय परिवार में नारी की सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वाह में नैतिक धार्मिक मूल्यों के आवरण में होने वाले शोषण का भी वर्णन किया है।

शोध प्रबंध के पंचम् - अध्याय कथाशिल्प को भी उपरोक्त अध्यायों की तरह ही दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में अमरकांत के शोध साहित्य में वर्णित सामाजिक जीवन की यथार्थ को व्यक्त करने में कथा भाषा की जीवंतता का विश्लेषण किया गया है। इसके अंतर्गत कथावस्तु का चयन एवं प्रस्तुतीकरण, पात्र एवं चरित्र विधान, कथोपकथन की सृष्टि, भाषा शैली का स्वरूप, नाटकीयता, अलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता, व्यंगात्मकता, देशकाल और वातावरण उद्देश्य तत्व आदि बिन्दुओं का विवेचन किया गया है।

जबकि दूसरे भाग में पूर्व साहित्यकारों के कथा साहित्य से अमरकांत के कथा साहित्य में शिल्पगत भिन्नता को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रबंध के अंतिम अध्याय उपसंहार में शोध प्रबंध के समस्त अध्यायों की सूक्ष्म समीक्षा करते हुए अमरकांत के कथा साहित्य की महत्ता, प्रासंगिकता एवं निम्न एवं मध्यवर्गीय जीवन की त्रासद स्थितियों के साथ उनके निहित आशा एवं आकांक्षा के वितान में व्यतीत होने वाली जीवन शैली की पूर्णता का अंकन है। इस तरह शोध विषय का समग्र क्रमवार सूक्ष्म समीक्षा करते हुए शोध को वैज्ञानिक बनने की पूरी कोशिश की गई है।

अध्यायों का संक्षिप्त सारांश

हिंदी कथा साहित्य की रचनात्मक यात्रा में सामाजिक वर्गीय विषमताओं की उपस्थिति भारतेंद युग से मिलने लगती है। हिंदी कथा साहित्य में उच्च वर्ग, मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग की सामाजिक, राजनीतिक एवं संस्कृति भूमिका का विशद् अभिव्यक्त पहले - पहल प्रेमचंद के साहित्य में ही मिलता है। प्रेमचंद की इसी कथा परंपरा के संवाहक कथाकार के रूप में अमरकांत की ख्याति है। यद्यपि हिंदी कथा साहित्य में अमरकांत भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि पर पूर्ण भारतीय परिवेश से आच्छादित अपनी यथार्थवादी सामाजिक कहानियों के लिए अमर हैं। इनकी 'दोपहर का भजन', 'डिप्टी कलेक्ट्री', 'जिंदगी और जोंक', 'पलाश के फूल' जैसी कहानियां हिंदी साहित्य की ही नहीं बल्कि भारतीय कथा साहित्य की अमर कहानी हैं। अमरकांत ने कहानियों के अतिरिक्त लगभग बारह उपन्यास भी लिखे जिनमें 'सूखा पत्ता', 'आकाश पक्षी', 'काले उजले दिन', 'सुन्नर पांडे की पतोहू', 'बीच की दीवार', 'इन्हीं हथियारों से', आदि हैं। भारतीय साहित्य के विभिन्न सर्वोच्च पुरस्कारों से सम्मानित 'इन्हीं हथियारों से' हिंदी उपन्यास साहित्य यात्रा का अनमोल रतन है। यह उपन्यास सन् बयालीस के स्वतंत्रता संग्राम में आम जन की सहभागिता का जीवन्त दस्तावेज है । लगभग बारह उपन्यास लिखने की बावजूद भी हिंदी कथा समीक्षाकों का अमरकांत को उपन्यासकार के रूप में अपेक्षित स्थान न दिया जाना शोध का विषय है। हिंदी साहित्य में अमरकांत के उपन्यासों पर अलग से शोध किए जाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है इससे उन्हें हिंदी के प्रतिष्ठित उपन्यासकारों की कतार में खड़ा किया जा सके।

हिंदी साहित्य में कहानी-उपन्यास के घेरे से अलग अमरकांत की एक और विशेषता है । वे हिंदी कथा साहित्य में निम्नवर्ग और मध्यवर्ग के कुशल चितेरे हैं। वे निम्नवर्ग और मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन परिवेश के सिद्धहस्त चित्रकार हैं। उनके द्वारा गढ़े गए शब्दचित्र निम्नवर्ग और मध्यवर्गीय संवेदना एवं स्वभाव को सहज रूप में उभार देते हैं।

हिंदी कथा साहित्य में अमरकांत मानवी पक्षधरता की अद्वितीय कथाकार हैं। वे संघर्ष एवं लेखन को अपना धर्म मानने वाले, भविष्य के प्रति आस्थावान, भारतीय संस्कृति के अनुगामी, सत्य के आकांक्षी एवं गांधीवाद से प्रभावित होने के कारण अन्याय, शोषण के विरुद्ध हमेशा बेचैन रहते हैं। उनकी दृष्टि मानवी पक्षधरता के व्यापक संदर्भों से जुड़ी हुई है। वे एक ऐसे पक्षधर लेखक हैं जो सामाजिक बदलाव में लेखक और लेखन की भूमिका को खास महत्व देते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के लिए वही भूमि चुनी, जिसमें वे जी रहे थे। यशपाल उन्हें गोर्की कहा करते थे। नई कहानी के चकाचौंध दौर में जहां कमलेश्वर राजेंद्र यादव
और मोहन राकेश की समकालीन त्रयी महानगर के खंडित पारिवारिक संबंधों को विषय बनती रही, वही अपने त्रिगुट (मार्कण्डेय, अमरकांत और शेखर जोशी) में अकेले अमरकांत ने अपनी कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय परिवेश के मध्य और निम्न मध्यवर्गीय जीवन के अनुभूत सत्य को उकेरा है। उनके कथा पात्र विशिष्ट नहीं आम आदमी हैं। आम आदमी के दुख- दर्द, आशाओं, आकांक्षाओं उसके संघर्षों और अंतर्विरोधों को लेकर ही उन्होंने अपने कथा संसार का गठन किया। जिस प्रकार प्रेमचंद ने प्रामाणिक रूप से किसान जीवन की गाथा का चित्रण किया, अमरकांत के यहां मध्य और निम्नमध्यवर्ग के ऐसे छटपटाते पात्र देखने को मिल जाते हैं, जिनसे

हमारी हर रोज भेंट होती है। उनके अपन्यास और कहानियां पढ़कर ऐसा लगता है कि यह पत्र, ये घटनाएं, ये संघर्ष हमारे अपने संघर्ष हैं। आज हाशिये के लोगों की चिंता, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श ने एक आंदोलन का रूप ले लिया है,अमरकांत पीछले पांच - छः दशकों से इन्हीं की आवाज बुलंद कर रहे थे। अमरकांत पर चेखव का यह कथन पूर्णतः ठीक उतरता है -यदि मैं समाज की सीमाओं में बॅधा हुआ लेखक हूं तो यह मेरा दायित्व है की मैं अपने युग, समाज, अपने आसपास के लोगों और उनके जीवन का चित्रण करु। अमरकांत में यथार्थ को पहचानने की अद्भुत क्षमता है, जिसके माध्यम से उन्होंने सामाजिक संदर्भों को विकसित कर नए मूल्यों की स्थापना करते हुए सत्यान्वेषण किया है।

अमरकांत ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश की सामाजिक विसंगतियों, मोहभंग, विकृतियों और विभिन्न समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। इस डगर पर उन्होंने झूठी आधुनिकता का नकाब नहीं ओढ़ा। साहित्य की किसी फैशनपरस्त आंदोलन में शरीक नहीं हुए। साहित्य में 'आत्मगत सत्यों का प्रक्षेपण' नहीं किया।

सामान्य कस्बाई परिवार में जन्मे अमरकांत का जीवन - परिवेश जंग - ए - आजादी के लिए हो रही उथल-पुथल और स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग से संबंद्ध रहा है। जिसमें उन्होंने सामाजिक भेदभाव, रूढ़िवादिता, अर्थ के कारण समाज का वर्गों में विभाजन, राजनीतिक अवसरवाद, क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद का नृत्य अपनी आंखों से देखा। ऐसे परिवेश में ही उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व विकसित हुआ।

अमरकांत मूलतः कहानीकार थे लेकिन उनका उपन्यासकार रूप भी उतना ही समृद्ध है जितना कि उनके भीतर का कहानीकार है। प्रथम उपन्यास सूखा पत्ता (1959) में अमरकांत ने 'कृष्ण' नामक एक लड़के की प्रेम कथा लिखी है। कृष्णा अपनी प्रेमिका उर्मिला से बहुत प्यार करता था किंतु उससे बिछुड़ने पर उसकी हालत सूखे पत्ते जैसी हो जाती है,लेकिन यही प्रेम उसमें संघर्ष की चेतना उत्पन्न करता है। 'ग्राम सेविका-(1962) में अमरकांत दमयंती के संघर्ष की कथा के साथ ही गांव की मूलभूत समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए, गांव के विकास के नाम पर बिचौलियों की लूट - खसोट और उनकी अवसरवादी प्रवृत्ति को बेबाकी से उजागर करते हैं। 'पराई डाल का पंछी' (1962) उपन्यास में अमरकांत ने दीपक जैसे पात्र के माध्यम से उस मानसिकता को समाज के सामने रखा है जो स्त्रियों को शारीरिक सुख का साधन मात्र मानते हैं। वे प्रेम और त्याग के उच्चादर्शों के बीच अपनी शारीरिक हवास की पूर्ति करते हैं । पर यह सब करते हुए भी वह अपनी सामाजिक स्थिति को लेकर सचेत रहते हैं, और जब भी उन्हें अपनी सामाजिक स्थिति के प्रति खतरा महसूस होता है तो वे अपने आपको हर तरह से बचाने की चेष्टा करते हैं। 'कटीली राह के फूल' (1963) उपन्यास में शर्मीले अनूप, मधु और कामिनी की त्रिकोणीय प्रेम कथा है। 'आकाश पक्षी (1967) उपन्यास सामंतवादी मिथ्या अहंकार के दलदल में फंसी नवीन पीढ़ी की बेबसी को व्यक्त करता है। 'बीच की दीवार' (1969) में अमरकांत ने स्त्री - संघर्ष द्वारा उसकी उन्नति एवं सामाजिक बदलाव के लिए आस्था एवं विश्वस व्यक्त किया है। 'काले - उजले दिन' (1969) उपन्यास आज की समाज व्यवस्था में परिवर्तन के साथ-साथ नारी स्वतंत्रता की मांग करता है। अमरकांत उन बिरले कहानीकारों में से एक हैं, जिन्होंने सामाजिक अंतर्विरोधों और राजनीतिक

पृष्ठभूमि को आधार बनाकर आमजन की असहायता, विवशता गरीबी, दरिद्रता, भुखमरी, महामारी एवं पीड़ा आदि को अपनी कहानियों का आधार बनाया। उनकी कहानियाँ जीवन की निकटतम स्थितियों के अर्थ को प्रतिपादित करती हैं। ये कहानियाँ कहीं छोटी-छोटी परिस्थितियों की पीड़ा को उजागर करती प्रतीत होती हैं,तो कहीं आदर्शवादी नुस्खों के खोखलेपन, ढोंग भरी अक्षमता, व्यक्तिवादी स्वार्थ एवं धूर्तता पर परदा डालती हैं।

ग्रामीण अंचलों में निम्न मध्यवर्गीय और मध्यवर्गीय जीवन के जिन पहलुओं को लेकर अमरकांत ने उपन्यासों की रचना की वह उनके समकालीनों में कम ही दिखाई देती है। अमरकांत के उपन्यासों में परिवर्तित सामाजिक स्थितियों का मार्मिक चित्रण हुआ है। विगत दो - तीन दशक से उपन्यासों के संदर्भ में यह मान्यता दृढ़ होती गई की उपन्यासकार अपने दायित्व को पूरी तरह निभाए और रचना के प्रति प्रतिबद्ध हो। इस दृष्टि से अमरकांत एक सचेत उपन्यासकार हैं । परिवर्तित सामाजिक मान्यताएं, आस्थाएँ और मूल्यों के संदर्भ में अमरकांत बड़े जागरूक रहे।आदमी के अंदर का खोखलापन, उसका दोहरा चरित्र, उसकी संवेदनाओं में गिरावट और भौतिकता की अंधी दौड़ मैं समस्त मानवी मूल्यों में बिखराव सामाजिक परिवेश की सबसे बड़ी विडंबना है। अमरकांत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक परिवेश के इसी गिरते स्तर को चित्रित किया है। उनकी दृष्टि में भावुकता यथार्थ की दुश्मन है, इसीलिए उन्होंने भावुकता के विरुद्ध यथार्थ को अपनाया है तथा अपने सामाजिक परिवेश के यथार्थ के भूमंडलीय यथार्थ से जोड़कर प्रस्तुत किया है।

सामाजिक विषमता से सामाजिक परिवेश पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिससे समाज दो वर्गों में बट जाता है। एक ओर साधन संपन्न लोग होते हैं, जिन्हें सारी सुविधाएं प्राप्त होती हैं। दूसरी ओर वंचित शोषित लोग होते हैं जो आवश्यकता की छोटी-छोटी चीजों के लिए भी संघर्षरत रखते हैं, और समाज की उपेक्षा का शिकार होते हैं। शिक्षा के प्रसार बदलते ज्ञान और विभिन्न सामाजिक सुधारो के बावजूद सामाजिक विषमता कायम है। उच्च वर्गीय कहे जाने वालों में अपने ऊंचेपान को लेकर अहंकार है। उच्च वर्गीय लोगों ने सब कुछ ले लिया है, सबके हक हड़प लिए हैं, और गरीबों के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा है, न खेत - जमीन न कुआँ - तालाब न पूजा- पाठ।

भारतीय समाज में जातियता की जड़े बहुत गहरी हैं। छुआछूत ऊंच - नीच की भावनाएं इस व्यवस्था के सबसे बड़े दोष हैं । लेकिन शिक्षा और संस्कृति, सुधार आंदोलनों, वैज्ञानिक उन्नति, औद्योगिकरण आदि के कारण यह व्यवस्था टूट रही है।

अमरकांत के उपन्यासों में आर्थिक परिवेश का चित्रण यथार्थ के धरातल पर हुआ है। अर्थाभाव के कारण जहां निम्न मध्यवर्गीय एवं मध्यवर्गीय व्यक्ति जीवन यापन भी नहीं कर पा रहा है, वहीं अर्थ लोलुप पूंजीपति अधिकाधिक धन कमाने के लिए मजदूरों का शोषण कर रहे हैं। जिसके कारण गरीब और गरीब होते जा रहे हैं जबकि अमीर और अधिक अमीर होते जा रहे हैं । अर्थाभाव एक कष्टप्रद स्थिति है। अमरकांत ने अर्थाभाव के कारण किसानों मजदूरों की वेबस जिंदगी का चित्रण किया है। अर्थाभाव के कारण परिवार बिखर रहे हैं, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। अर्थार्जन के लिए व्यक्ति को अपने कार्य क्षेत्र में अनेक प्रकार की विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। उसे पग - पग पर आर्थिक विषमताओं से

जूझना पड़ता है। वह इन संघर्षों के बीच अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की कोशिश में लगा रहता है।

आर्थिक विडंबनाएं व्यक्ति के लिए जीवन की समस्त गतिविधियों पर प्रभाव जमा रखती हैं, जो उसके जीवन को खोखला और कुंठित कर देती हैं। व्यक्ति आर्थिक विडंबनाओ से इतना घिर जाता है कि सहज सामान्य सा जीवन भी उसे बोझ सा लगता है। इसीलिए वह जीवन से पलायन की ओर तक भी सोचने लगता है। 'सूखा पत्ता' उपन्यास के माध्यम से युवाओं की राजनीतिक सहभागिता, उनके राष्ट्र - प्रेम एवं त्याग की भावना को निरूपित करते हुए राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में उनकी भूमिका स्पष्ट की है। 'विदा की रात' उपन्यास में अमरकांत ने स्पष्ट किया है कि अवसरवादी नेता भोली-भाली जनता की भावनाओं को भड़काकर उन्हें साम्प्रदायिक विद्वेश की आग में झोंक कर अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं ।

इस प्रकार अमरकांत ने राजनीतिक परिवेश को तत्कालीन वातावरण के अनुरूप प्रस्तुत किया है। उनके स्वस्थ युगबोधी दृष्टि से राजनीति का कोई भी पक्ष अनदेखा नहीं रहा।

वर्तमान परिवेश की परिवर्तित परिस्थितियों ने निम्न मध्यवर्गीय और मध्यवर्गीय जीवन में बिखराव उत्पन्न कर दिया है। परिणाम स्वरूप मध्यवर्ग और निम्न वर्ग में संघर्ष पनपा है। इसी संघर्ष में उनका वास्तविक रूप भी उभरा है। इसे अमरकांत ग्रामसेविका, सुंनर पांडे की पतोह, पराई डाल के पंछी, उपन्यासों में दमयंती, राजलक्ष्मी, अहिल्या के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

सामाजिक परिवेश में व्याप्त विषमताओं, जातिगत संकीर्णताओं स्त्री - पुरुष के परिवर्तित रूप एवं नारी जीवन की विसंगतियों का तथा आर्थिक परिवेश की विषमताओं और विडंबनाओ का राजनीतिक परिवेश में सत्ता और राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता तथा वर्तमान मानवीय संघर्षों का अपने समय एवं परिवेश के अनुरूप चित्रण कर अमरकांत वर्गीय जीवन दृष्टि का सफल परिचय दिया हैं।

अमरकांत की कहानियों में नारी जीवन की विसंगतियां वर्तमान नारी - विमर्श से भिन्न रूप में व्यक्त हैं। समाज में अंश मात्र संकीर्णताओं के साथ, देह के आखेट और देह की स्वतंत्रता के आग्रह से मुक्त उनकी कहानियाँ सामाजिक परिवेश में नारी मन की स्वतंत्रता और आकांक्षाओं के पक्ष में लेखकीय दायित्व का भरपूर एहसास कराती हैं।

अर्थ प्रधान युग में समाज उच्च वर्ग, मध्यमवर्ग और निम्न वर्ग में विभाजित हो गया है । अमरकांत की कहानियों में तीनों वर्गों की आर्थिक स्थिति , परिस्थिति यथार्थ चित्रण हुआ है। उच्च वर्ग की शोषण वृत्ति, तो वहीं मध्यवर्गीय इंसान आर्थिक विषमताओं से जूझ रहा है और निम्न वर्ग की स्थिति इतनी दयनीय और कारुणिक है कि चहुँ ओर आर्थिक बिडम्बनाओं से घिरा हुआ है - 'मूस',निर्वासित, नौकर, डिप्टी कलेक्टरी, दोपहर का भोजन आदि कहानियों में मध्यवर्गीय व निम्नवर्गीय आर्थिक विषमताओं व आर्थिक विडंबनाओ के प्रसंग विस्तार पाते हैं। अमरकांत स्वाधीन भारतीय राजनीति के उत्थान - पतन के स्वयं भुक्तभोगी हैं।

अमरकांत ने पुरानी पीढ़ी का मोहभंग, रूढ़ियों से छुटकारा पाने की कोशिश, आर्थिक दबाव से पारिवारिक विघटन, आपसी संबंधो में परिवर्तन

आदि पक्षों को वर्तमान परिवेश में चित्रण का आधार बनाया है और एक व्याप्त मानवी धरातल को उसके यथार्थ आयामों के साथ लेकर कहानी की रचना की जिससे न केवल विस्तृत परिप्रेक्ष्य ही कहानी को मिला वरन् उसका यथार्थ भी उभरा जिसने अमरकांत की वर्तमान परिवेश की ओर अग्रेसित किया।

निष्कर्ष के रूप में अमरकांत की कथा साहित्य के महत्व का आकलन किया गया है। अमरकांत ने अपने कथा साहित्य में अपने युगीन परिवेश के उन सभी पक्षों पर प्रकाश डाला है जिनसे परिवेश का स्वरूप सुस्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और वर्तमान परिवेश के माध्यम से युग बोध की विविधता को प्रमुखता से वर्णित किया गया है।

भावी शोध संकेत

साहित्यकर अमरकांत ने अपना संपूर्ण जीवन मध्यवर्गीय परिवेश में गुजारा और मध्यवर्गीय साहित्य की ही रचना की । वे हिंदी साहित्य के वरिष्ठ कथाकार माने जाते हैं। हिंदी कथा साहित्य और मध्यवर्ग का बड़ा घनिष्ठ सम्बंध माना जाता है। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में भाग लेने वाले अमरकांत ने मध्यवर्गीय समाज में होने वाले बदलावों को एक नई पृष्ठभूमि प्रदान की । वे कुशल राजनीतिज्ञ भी माने जाते हैं। उन्हें यह बात हमेशा खलती रही कि भारत देश आजाद होने के बाद भी हमने अंग्रेजी शैली का ही अनुसरण किया । अमरकांत एक ऐसे रचनाकार हैं, जो निम्न मध्यवर्गीय, मध्यम मध्यवर्गीय और उच्च मध्यवर्गीय जीवन और समाज की विडंबना को कथा की पृष्ठभूमि में रखते हैं। वे यह चाहते थे कि समय के साथ इस वर्ग में भी बदलाव हो । अमरकांत को प्रगतिशील विचारधारा का लेखक माना जाता है। वे प्रेमचंद की पीढ़ी के अंतर्गत आने वाले साहित्यकार हैं । उन्होंने उपन्यासों तथा कहानियों में मनुष्य जीवन का यथार्थ चित्रण करने में सफलता अर्जित की है। वे सच्चे और प्रगतिशील विचारधारा की ओर संकेत करते हुए समाज की गहराई से जुड़ने की बात करते हैं ।प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता के द्वारा अपने शोध कार्य के उपरांत जो नए विषय सामने आए हैं उन पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है, तथा अमरकांत के समग्र साहित्य पर स्वतंत्र रूप से निम्नलिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है :-

1. अमरकांत के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना।
2. अमरकांत के कथा साहित्य में स्त्री चेतना।
3. अमरकांत के उपन्यासों में सामाजिक विषमताओं का अध्ययन।
4. अमरकांत की कहानियों में सामाजिक वर्गीय विषमताओं का अध्ययन ।
5. अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन बोध का स्वरूप।
6. अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय समाज।

7. अमरकांत के कथा साहित्य में सामाजिक बोध।

8.अमरकांत के उपन्यासों की महत्ता।

अमरकांत की कथा साहित्य का समग्र प्रभाव

स्वातंत्र्योत्तर काल में देश की सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थिति में बड़ी तेजी से परिवर्तन होता है। स्वतंत्रता को लेकर लोगों ने जो सपने संजोए थे वे सभी चूर-चूर हो जाते हैं । जो लोग आजादी के आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिए थे वही लोग आजादी के बाद चोला बदलकर लूट खसोट, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद के दल-दल में फंस गए। जनता का इन सबसे मोह भंग होता है। समाज में मोहभंग, अजनबी, अकेलेपन की प्रवृत्तियां बढ़ने लगते हैं। नए उभरते उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग में ये प्रवृत्तियां साफ-साफ झलकती हैं। आर्थिक संघर्ष करते हुए मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग जब अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाते तो वह हताशा, घुटन व कुंठा का शिकार हो जाते हैं । इन लोगों की आर्थिक स्थिति आजादी के बाद भी नहीं बदलती है। देश व समाज की इन्हीं परिवर्तित परिस्थितियों के बीच से नई कहानी का आंदोलन फूट पड़ता है। नई कहानी आंदोलन से जुड़े साहित्यकारों की पैनी दृष्टि तत्कालीन परिवर्तित परिस्थितियों पर लगी हुई थी। वे अपने साहित्य के माध्यम से बदलती परिस्थितियों व परिवर्तित चेतना के यथार्थ को अभिव्यक्त कर रहे थे। इन साहित्यकारों में राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, भीष्म साहनी, मारकण्डेय, शेखर जोशी, अमरकांत, फणीश्वरनाथ रेणु इत्यादि का नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

अमरकांत ने अपने लेखन की शुरुआत नई कहानी आंदोलन के दौर से की । लेकिन नई कहानी आंदोलन के दौर से अपने लेखन की शुरुआत करने के बावजूद भी वे इस आंदोलन के झंडा बरदार नहीं रहे। हालांकि नई कहानी की विशेषताओं का प्रभाव उनकी रचनाओं में दिखाई पड़ जाता है ।

अमरकांत ने अपनी कहानियां व उपन्यासों के माध्यम से व्यक्ति, परिवार और समाज के अंतर्सम्बंध को प्रकट किया है। नई परिस्थितियों में व्यक्ति के संघर्ष, उसके सपनों तथा आशा - आकांक्षाओं को अमरकांत संवेदनात्मक गहराई से चित्रित करते हैं। दोहरे चरित्र वाले, धर्म, कर्तव्य व नैतिकता की आड़ में अपने बुरे कर्मों को सही ठहरने वाले, कर्ज में डूबे अपने पारिवारिक दायित्वों को पूरा न कर पाने की विवशता तथा दूसरों की मेहनत पर गुलछर्रे उड़ाने वाले व्यक्तियों का यथार्थ अमरकांत अपनी रचनाओं में प्रकट करते हैं। अमरकांत अपनी सूक्ष्म व पैनी दृष्टि से व्यक्ति के चरित्र को परत दर परत अपनी रचनाओं में खोल देते हैं।

किसी भी व्यक्ति के चरित्र निर्माण में परिवार की भूमिका बेहद अहम होती है । पारिवारिक वातावरण का व्यक्ति के व्यक्तित्व पर गहरा असर होता है। अमरकांत ने काले - उजले दिन, सुन्नर पांडे की पतोह, जैसे उपन्यासों में इसी तथ्य को प्रकट किया है। इसी तरह आर्थिक विपन्नता, विपरीत परिस्थितियां, शक तथा प्रेम का अभाव किस प्रकार परिवार में विखंडन की स्थितियां पैदा कर देता है यह सब अमरकांत ने अपनी कहानियों निर्वासित, घर, कुहासा इत्यादि में प्रकट किया है । अमरकांत जिस दौर में लिख रहे थे वह दौर सामाजिक बदलाव का था।

अमरकांत की सूक्ष्म व पैनी निगाह इस सामाजिक बदलाव पर टिकी रहती है । अपनी कहानियों व उपन्यासों में अमरकांत ने इसी बदलते सामाजिक यथार्थ को प्रकट किया है। सरकारी तंत्र की विफलता, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, घूसखोरी,भाई भतीजाबाद, लोगों की दिन-ब-दिन बिगड़तीआर्थिक स्थिति ,बेरोजगारी, टूटते सपने, हताश व निराश हुआ पीढ़ी का दर्द जैसे यथार्थ को अमरकांत ने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। स्त्री के संघर्ष तथा उसकी सोच में आए परिवर्तन को भी अमरकाल ने बीवी के खत, औरत का क्रोध जैसी कहानियों में प्रकट किया है। सामाजिक रूप से अकेले, उपेक्षित दयनीय लोगों को अमरकांत अपनी रचनाओं में नायक की तरह पेश करते हैं। अर्थात ऐसे पात्र उनकी रचनाओं के मुख्य पात्र हैं। इन पात्रों के जीवन संघर्ष, शोषण, गरीबी व इंसानियत को अमरकांत अपनी रचनाओं में प्रकट करते हैं।

अमरकांत की रचनाएं मध्यवर्ग व निम्नमध्यवर्ग के यथार्थ को प्रकट करती हैं। इस वर्ग के व्यक्ति के संघर्ष, सपने, शोषण, गरीबी, आकांक्षा तथा बेबसी को अमरकांत संवेदनात्मक गहराई से चित्रित करते हैं। इस वर्ग की आकांक्षाएं व सपना उच्च होते हैं। वह अपने सपनों को साकार करने की जद्दोजहद करता है, लेकिन उसे असफलता ही हाथ लगती है। फलतः वह हताश , निराश व कुण्ठित हो जाता है। लेकिन अमरकांत के पात्र हताश, निराश होने के बाद भी फिर से सपनों को साकार करने के लिए संघर्ष करने लगते हैं। डिप्टी कलक्टरी, अमेरिका की यात्रा, गगन बिहारी, जैसी कहानियाँ इसी बात को स्पष्ट करती हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में अमरकांत के कथा - साहित्य में अभिव्यक्त व्यक्ति, परिवार, स्त्री-पुरुष और समाज के उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग, अमीर गरीब आदि के जीवन के यथार्थ को ध्यान में रखकर अमरकांतर के कथा साहित्य का विवेचन - विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष

अमरकांत हिंदी साहित्य में निम्नवर्गीय एवं मध्यवर्गीय सामाजिक संरचना एवं संवेदना के प्रबलतम कथाकार हैं। अमरकांत का कथा सहित्य निम्नवर्ग एवं मध्यवर्ग की एक विशिष्ट अहमियत को व्यक्त करता है। उनके समग्र सहित्य अनुशीलन से यह उद्घाटित होता है कि उनके साहित्य में मध्यवर्ग जिस सहजता के साथ व्यक्त हुआ है, अन्यत्र दुर्लभ है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के नागरिकों की आत्मा के कथाकार अमरकांत आम आदमी और निम्नवर्गीय तथा मध्यवर्गीय समस्याओं पर आधारित साहित्य का सृजन करने में सफल रहे हैं। मध्यवर्गीय जिंदगी को जीते हुए, उसे समझते हुए, उसकी सम्यक् आलोचना करने में सिद्धहस्त हैं। उनका प्रगतिशील एवं आशावादी सहित्य भविष्योन्मुखी है, जो समाज को गतिशीलता प्रदान करता है। उनका साहित्य बेहतर समाज निर्माण की प्रेरणा देता है। उनका सहित अपने अंदर अनेक विरोधाभासों, अंतर्द्वन्द्वों, संघर्षों को वाणी देते हुए संभावनाओं के साथ आगे बढ़ता है ।

निसंदेह अमरकांत जीवन के धरातल से जुड़े हुए साहित्यकार हैं। उन्होंने निम्न मध्यवर्गीय समाज की जीवंत समस्याओं को देखा, परखा व स्वयं भोगा है। इसीलिए उनकी कहानियों में हमें आत्मीयता झलकती है। उनकी कहानियों में हमें एक ऐसे समाज की यथार्थ झांकी मिलती है जिन्हें प्रायः अन्य साहित्यकारों ने अनदेखा कर दिया है। अमरकांत की समस्त कहानियाँ सामाजिक

सरोकार की कहानीयां हैं,सामाजिक समस्याओं की कहानीयां हैं, सामाजिक चेतना की कहानीयां हैं जो तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि अमरकांत ने समाज में व्याप्त वर्गीय संघर्ष, परिवार व समाज के अंतर्सम्बन्धों को उनके यथार्थ को प्रमाणित ढंग से चित्रित किया है।

शोध प्रबंध की स्थापनाएं

अमरकांत एक प्रतिबद्ध रचनाकार हैं। उनकी प्रतिबद्धता जनता के साथ है। उनके साहित्य में जनता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता साफ-साफ झलकती है। अपनी प्रतिबद्धता का निर्वाह वह जीवन भर करते रहे। उससे कभी विचलित नहीं हुए। उन्होंने जनता के दुख - दर्द, आशा, आकांक्षा, भूख, गरीबी, शोषण, जीवन संघर्ष ही को अपनी रचनाओं में वाणी दी है। आज अमरकांत हमारे बीच नहीं है लेकिन उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य, पर पाठकों पर, मित्रों व परिजनों पर साफ-साफ देखा जा सकता है। अमरकांत की रचनाओं में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय तथा निम्न मध्यवर्गीय यथार्थ को रेखांकित करते हैं तथा अमरकांत को मनुष्य के छोटेपान के साथ-साथ छोटे मनुष्य का कथाकार भी मानते हैं। शेखर जोशी अमरकांत की रचनाओं में अनुभव की प्रमाणिकता को रेखांकित करते हैं तो ममता कालिया उन्हें एक बेहतर लेखक होने के साथ ही एक बेहतर इंसान भी मानती हैं। जिनकी प्रतिबद्धता जनता के साथ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

उपन्यास-

- अमरकांत : इन्हीं हथियारों से: राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी..नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002,पहला संस्करण 2008

- अमरकांत : बीच की दीवार : राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1 बी..नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002,पहला संस्करण 2008
- अमरकांत : काले उजले दिन : राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1 बी..नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002,पहला संस्करण 2009
- अमरकांत : कटीली राह के फूल : राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002,पहला संस्करण 2009
- अमरकांत : विदा की रात : अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008
- अमरकांत : सुंनर पांडे की पतोह : राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1 बी..,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002,पहला संस्करण 2005
- अमरकांत : सूखा पत्ता : राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984
- अमरकांत : आकाश पक्षी : राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी.,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 110002,प्रथम संस्करण 2003
- अमरकांत : लहरें : अमरकृतित्व प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2008
- अमरकांत : ग्राम सेविका : राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2008

कहानी -

- अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला खंड) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2013
- अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ (दूसरा खंड) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची :-

- प्रथम संस्करण, 2009
- डां.केशवदास शर्मा, आधुनिक उपन्यास और वर्ग संघर्ष, राधा पब्लिकेशंस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991
- डा.शर्मा आनंद , उपन्यासकार कमलेश्वर समाजशास्त्रीय निकष पर, मेघा बुक्स,

दिल्ली प्रथम संस्करण 2002

- शशि भूषण सिंह (डॉ), हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा प्रथम संस्करण 1986
- शुक्ल बैजनाथ प्रसाद (डॉ), भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युग चेतना, प्रेम प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1977
- रविन्द्र कालिया , ममता कालिया, अमरकांत की कृतित्व और व्यक्तित्व की पड़ताल, प्रेस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1977
- रविन्द्र कालिया , अमरकांत एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2012
- डॉ.कुंवरपाल सिंह , हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना, हरिराम द्विवेदी पाण्डुलिपि प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996
- मुंशी प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद प्रकाशन वर्ष 1969
- हजारी प्रसाद द्विवेदी, विचार और वितर्क, साहित्य भवन, इलाहाबाद 1969
- कृष्ण कुमार विस्सा, साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984
- रुचि मिश्रा, अमरकांत के उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज, नवजीवन पब्लिकेशन, जयपुर, प्रथम संस्करण 2014
- डॉ.सुरेश सिन्हा , हिंदी उपन्यास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1972
- रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृत के चार अध्याय, लोग भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद तीसरा संस्करण 2010
- भोलानाथ, आधुनिक हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन आगरा, संस्करण 1969
- डॉ उषा भटनागर वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों का संस्कृत अध्ययन, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1992

. शोध पद्धति- बी.एल फाड़िया

. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका

. रामचंद्र शुक्ल- हिन्दी साहित्य का इतिहास,हिन्दी शब्द सागर की भूमिका के रूप में।

• पत्र पत्रिकाएं

• महात्मा गांधी, मेरा धर्म हरिजन

• विद्या अलंकार चंद्रगुप्त आजकल पत्रिका मार्च 1960

• पांडेय गोरख अभियान पत्रिका

• परमानंद श्रीवास्तव, ज्ञानदेय पत्रिका, 1960

• राजेंद्र किशोर, कल्पना पत्रिका, अगस्त 1961

• दैनिक भास्कर, समाचार पत्र, 18 फरवरी 2014

• डॉ.हरीशचरण वर्मा, युग - शिल्पी शोध पत्रिका, मार्च-अगस्त 2013

• अरविंद वशिष्ठ, माधुरी पत्रिका, दिसंबर 1974

• नया संघर्ष, मार्च-अप्रैल 1919

• नागर विष्णु दत्त, नवभारत टाइम्स